Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

दक्षिण भारत की संत काव्यों में जीवन मूल्य

डॉ.रंजित एम् एअद्ध्यक्ष हिंदी विभागएएम्.इ.एस अस्माबी कोलेजएपी वेम्बलूर,त्रिशुर ,केरला)

संत वस्तुतः एक स्वभाव और मनोवृत्ति का नाम है। इस बारे में संत हृदय नवनीत समानाश या संतों के मन रहत हैए सबके हित की बातश जैसे उद्धरण प्रसिद्ध हैं। संत के लिए ब्रह्मचारीए गृहस्थ या वानप्रस्थी होना अनिवार्य नहीं है। जो निजी या पारिवारिक हितों से ऊपर उठ चुका हैय जिसने अपना तनए मन और धन समाजहित में अर्पित कर दिया हैय वह संत और महात्मा है। भले ही उसकी अवस्थाए शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो

भारत में संन्यास की परम्परा बहुत पुरानी है। चार आश्रमों में सबसे अंतिम संन्यास आश्रम है। इसका अर्थ है कि अब व्यक्ति अपने सब घरेलू और सामाजिक दायित्वों से मुक्त होकर पूरी तरह ईश्वर की आराधना करे तथा अपने अगले जन्म के लिए मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करे। 75 वर्ष के बाद इस आश्रम में जाने की व्यवस्था हमारे मनीषियों ने किया है। इस समय तक व्यक्ति का शरीर भी ऐसा नहीं रहता कि वह कोई जिम्मेदारी लेकर काम कर सके। अतः घरेलू काम बच्चों को तथा सामाजिक काम नई पीढ़ी को सौंपकर प्रभुआश्रित हो जाना ही संन्यास आश्रम है।चारों युगों में भिन्न भिन्न गुरुओं की कल्पना की गयी. अब हम दक्षिण भारत के भक्त कवियों के बारे में विचार करेंगे।

तमिल भक्ति साहित्य

मध्ययुगीन काल इंपीरियल चोलों की अवधि है जब पूरे दक्षिण भारत एक ही प्रशासन के तहत किया गया था. 11 वीं और 13 वीं शताब्दी के बीच की अवधि के दौरान जो चोला सत्ता अपने चरम सीमा पर थाए वहाँ अपेक्षाकृत कुछ विदेशी घुसपैठ कर रहे थे और तमिल लोगों के लिए जीवन में शांति और समृद्धि के माहौल थे. चोल राज मुख्यतः दक्षिण भारतएश्रीलंका के भागों में व्याप्त थे।इस प्रकार उन्हों ने अपने स्वयं के परे के संस्कृतियों के साथ बातचीत करने का मौक़ा अपने प्रजाओं को दिया .जहां भी चोल राजा गए वहां अपने पसंदीदा भगवान शिव के लिए कई मंदिरों के निर्माण किये . शैव और वैष्णव संप्रदाय के धार्मिक सिद्धांत के लिए व्यवस्थित और एकत्रित करके वर्गीकृत करने का काम इस काल में हुए थे।महान वैष्णव संत रामानुज आतिराजेंद्र चोल और कुलोतुंगा चोल के शासन काल में रहनेवाले

तमिल नाडू में महादेव के सेवकों के रूप में जीवन बिताये 63 लोगों को नायनार अथवा नायनमार नाम से जाने जाते है।उस समय समाज में प्रचलित चारों वर्णों के इसमें शामिल है।वे सृष्टी एस्थिति एसंहार एतिरोधान एवं अनुग्रह जैसे पांच क्रियाओं के महादेव को मानेवाले

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

थे .अर्थात में शिव ही सब है।कश्मीर में अभिनव गुप्त और दक्षिण भारत में तिरुमूलर शैव सिद्धांत के बारे में एक ही रूप में बताया है .कश्मीर में इसको त्रिक्षास्त्र नाम दिया है तो दक्षिण में आगम शास्त्र .कन्नाप्पार से शुरू होकर सुन्दरमूर्ति स्वामिकल तक के 63 नायनारों की सूचना श्पेरिय पुराणं श नामक रचना में मिलेंगे. उसी अठारह सिद्धों के बारे में भी सूचनाएं उपलब्द्ध है।अगस्त्यर एनंदी देवर एतिरुमूलरएधन्वन्तरी एश्री पाम्बात्ति आदि उनमें प्रमुख है।ऐसा माना जाता है वे मथुरा के आसपास वत्राप्प नामक जगह में स्थित चतुरगिरी नामक पहाड़ को पूजने आये थे।चतुरागिरी को वे महादेव मानकर पूजा कर रहे थे।

अद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य शंकराचार्य के बाद वैष्णव सम्प्रदाय को प्रमुखता मिला .दसवीं सदी के पूर्व तमिलनाडु में जिए आलवार नाम से विख्यात तमिल भक्त कवियों ने 108 विष्णु मंदिरों के बारे में लिखे है।यह 4000 दिव्या प्रबंध नाम से जाने जाते है .रामानुजाचार्य और माधवाचार्य भी वैष्णव धर्म के प्रचारक थे .पोइगे आलवार एकुलशेखरा आलवार जैसे 12 संतों के नाम यहाँ उल्लेखनीय है।श्आलवारश शब्द का शाब्दिक अर्थ है – ईश्वर की चिंता में डूबे हुए व्यक्ति. श्री रामानुजाचार्य एक प्रमुख वैष्णव आचार्य थे .आपने ब्रह्म सूत्र के अनुवाद किये थे। ऐसा माना जाता है दक्षिण से उत्तर की ओर भक्ति का प्रवाह आपके कारण ही हुए थे।

बारह अल्ल्वारों में एकमात्र महिला थी आंडाल। इनकी भक्ति की तुलना राजस्थान की प्रख्यात कृष्णभक्त कवयित्री मीरा से की जाती है। मीराबाई की तरह आंडाल ने भी श्रीकृष्ण(रंगनाथ) को अपनी प्रेमी मानकर जीवन बिताई .भाव्पूर्नता और दार्शनिकता उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। आपकी पूर्वाश्रम के नाम गोदायी थी जो बाद में आंडाल रूप में बदल गयी .उनकी पहली रचना श्तिरुप्पवाईश थी .तीस झंदोंवाली इस रचना में आप प्रेमी भगवान् भगवान् की बात कही है।रामायण और महाभारत जैसे थिरुप्पवाई तमिलनाडु में विशेष रूप से महान धार्मिक उत्साह के साथ महिलाओंए पुरुषोंए और सभी उम्र के बच्चों द्वारा सुनायी जाती है . आपकी रचना श नक्कियार तिरुमोली श्;हमारी देवी की पवित्र बातें) में 143 छंदों में अपनी प्रेमी की तीव्र लालसा व्यक्त कर दी है .शास्त्रीय तमिल काव्य सम्मेलनों के उपयोग और वेदों और पुराणों से कहानियों के प्रयोग से अंदल ने इस रचना को भारतीय धार्मिक साहित्य की पूरी सरगम में संभवतः अद्वितीय है बनायी है.

तमिल के कंबर ने कम्ब रामायणम लिखे जो रामावातारम नामे से भी जाने जाते है।यध्यपि यह रचना वाल्मीकी रामायण के आधार पर किये गए है तो भी उसका ठीक अनुवाद भी नहीं है।तमिल नाडू के सर्व श्रेष्ट रचना के रूप में इसको मान्यता है। आलोचक ऐसा कह रहे है कि वाल्मीकी रामयण में जो संशोधन होना था वह कम्बन ने किया।इसलिए तमिल साहित्य के माह काव्य का पद काम्ब रामयण को मिला है। कंबन वैष्णव थे। उनके समय तक बारहों प्रमुख आलवार हो चुके थे और भक्ति तथा प्रपति का शास्त्रीय विवेचन करनेवाले यामुनए

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

रामानुज आदि आचार्यों की परंपरा भी चल पड़ी थी। कंबन के प्रमुख आलवार "नम्मालवार" (पाँचवे आलवार जो शठकोप या परांकुश मुनि के नाम से भी प्रसिद्ध हैं) की प्रशस्ति की है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि कंबन की रामायण रंगनाथ जी को तभी स्वीकृत हुईए जब उन्होंने नम्मालवार की स्तुति उक्त ग्रंथ के आरंभ में की। इतना ही नहींए कंब रामायण में यत्र-तत्र उक्त आलवार की श्रीसूक्तियों की छाया भी दिखाई पड़ती हैए तो भी कंबन ने अपने महाकाव्य को केवल सांप्रदायिक नहीं बनाया हैए उन्होंने शिव विष्णु के रूप (केवल सृष्टिकर्ता) में भी परमात्मा का स्तवन किया है और रामचंद्र को उस परमात्मा का ही अवतार माना है। ग्रंथारंभ में एवं प्रत्येक कांड के आदि में प्रस्तुत मंगलाचरण के पद्यों से उक्त तथ्य प्रकट होता है। शैवों तथा वैष्णवों में कंब रामायण का समान आदर हुआ और दोनों संप्रदायों के पारस्परिक वैमनस्य के दूर होने में इससे पर्याप्त सहायता मिली।

श्तिरुक्कुरलश के रचयिता तिरुवालुवर का जन्म चेन्नई शहर के आस पास के मैलाप्पूर में हुए थे .मानव जीवन कैसे जीना है इसका वर्णन इस रचना में हुए है।बाइबिल के बाद सबे ज़्यादा भाषाओं में अनूदित रचना भी यही है। तमिल साल का उद्भव भी आपके जन्मकाल के अनुसार ही किया जा रहा है .कन्याकुमारी के विवेकान्द स्वामी के स्तूप के पास ही आपका स्तूप निर्मित हुयी है.

ताइवुमानवर का जन्म थंजावूर जिले के वेदारण्य नामक स्थान में हुआ था आपकी क्षमाताओं को मानते हुए तिरुच्चिराप्पल्ली के राजा आपको अपने उपदेष्टा के रूप में चुना और आप उस पद में कर्मरत रहेबाद में आत्म साक्षात्कार के लिए अरुल नदी शिलाचारियर नामक मौन गुरु के पास गए और गुरू के आदेशानुसार जीवन चलाये .आप अपने शिष्यों को बचने की सलाह दी सन 1742 ई .में आपका देहांत हो गया . तमिल्नाडू के राम्नाथं जिला में जन्म लिए वेंकटरामन बाद में रमण महर्षी नाम से विख्यात हुए।अरुणाचल (जो तमिल नाडू) में आपका आश्रम है स्थित है।अरुनाचल अक्श्रमालारुनाचाला पतिकं जैसे कई रचनाओ और आदि शंकर के विवेक चूडामनीएदग दृश्य विवेक के तमिल अनुवाद आदी के ज़रिये आपने लोगों में ज्ञान बढाने की कोशिश की .

केरल के भक्ति साहित्य

कलि युग में श्री गौड़पादाचार्य एगोविनाभागावाद्पादाचार्य और श्री शंकराचार्य गुरु के स्थान में प्रतिष्टित किया गया है वही शंकराचार्य के बारे में हम विचार कर रहे हैस मानव को शांति और सौहार्दए राष्ट्रीय चेतनाए विश्व बंधुत्व एवं वैदिक संस्कृति का पावन संदेश प्रसारित करने हेतु परम पुज्य श्रीमद् आद्य शंकराचार्य का अविर्भाव 2593 कल्पद्ध 509 पूर्व नंदन संवत्ए शुभ ग्रहो युक्त वैशाख शुक्ल पंचमी मध्याह्न में केरल स्थित कालड़ी ग्राम

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

में ब्राह्मण दंपति के यहाँ हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरू तथा माता का नाम आर्यम्बा था .आचार्य शंकर ने अपने धर्मोद्धार संबंधी कार्यों को अक्षुण करने हेतु भारत के अति सुप्रसिद्ध धर्मों में चार पीठों(मठों) की स्थापना की। पूर्व में जगन्नाथ पूरी में गोवर्द्धन पीठए उत्तर में हिमालय बदरिका आश्रम में ज्योर्तिपीठए पश्चिम में द्वारिका में शारदा पीठए दक्षिण में श्रृंगेरीपीठ। इन पीठों में आचार्य शंकर ने अपने चार प्रमुख शिष्यों को पीठाधिपति नियुक्त किया। आज भी ये मठ आध्यात्मिकता के केंद्र हैं।आचार्य शंकर ने सन्यासियों की दस सुविख्यात श्रेणियाँ भी स्थापित की जो गिरिए पुरीए सरस्वतीए तीर्थए आश्रमए वनए अरण्यए पर्वत एवं सागर नाम से प्रसिद्ध हैं ब्रह्मसूत्रए ग्यारह प्रमुख उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीताश पर भाष्य लिख कर आचार्य शंकर अमर हो गए.

एषुत्तच्छन ने मलयालम साहित्य में एक नए युग का संदेश दिया और मलयालम साहित्य को अपनी दो प्रमुख रचनाओं श्अध्यात्म रामायणम्श और श्भारतम्श द्वारा समृद्ध बनाया। वह प्रथम महान् कवि थे जिन्होने ब्राह्मणों के धार्मिक एवं साहित्यिक एकाधिकार को तोड़ा वह नायर होने के कारण ब्राह्मणेतर था। रूढ़िवादी धार्मिक एवं साहित्यिक वर्ग के लोगों ने उनकी रचना पर अनेक आक्षेप किए। फिर भी वह केरल का बहुत ही लोकप्रिय कवि हुए। उनमें गहन साहित्यिक विद्वत्ता और कठोर आध्यात्मिक अनुशासन था। उसकी रचनाएँ किलिप्पाट्टु (शुंकगीति) शैली में लिखी हुई हैं। अध्यात्म रामायणम्संस्कृत के अध्यात्म रामायण महाकाव्य का स्वतंत्र अनुवाद है जिसकी रचना १४वीं शताब्दी में किसी अज्ञात लेखक ने की थी। एषुत्तच्छन का वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा इस पुस्तक की निष्पक्ष साहित्यिक श्रेष्ठता का चुनाव तत्कालीन भक्तियुक्त वातावरण से अवश्य ही प्रभावित हुआ होगा। केरल में इस पुस्तक की जनप्रियता की तुलना हिंदीभाषी जनता के मध्य रामचरितमानस की लोकप्रियता से की जा सकती है। महाकाव्य के कलात्मक गुणों को कुछ सीमा तक भक्तिरस की प्रधानता ने निर्बल बना दिया है।मलयालम भाषा के पिता के रूप मे आप जाने जाते है

उनका द्वितीय महाकाव्य भारतम्ए जो व्यास के महाकाव्य का अद्वितीय संक्षिप्त विवरण हैए इस प्रकार की भक्ति के अत्यधिक बोझ के दोषों से मुक्त है। मलयालम भाषा की साहित्यिक क्षमता सबसे पहले एषुत्तच्छन की रचनाओं में भली भाँति दृष्टिगोचर हुई। उसके पूर्व भी मलयालम साहित्य ने अपने को तमिल और संस्कृत की गहरी पकड़ से स्वतंत्र करने की प्रवृत्तियाँ प्रदर्शित की थी। एषुत्तच्छन ने इन प्रवृत्तियों को सक्रिय सहयोग प्रदान किया। उन्होने भाषा को शुद्ध किया और उसे उत्कृष्ट भावनाओं तथा उच्च विचारों को व्यक्त करने का प्रभावशाली सृजनात्मक उपकरण बनाया। उन्होंने सरल द्रुविदियन छंदों का प्रयोग महान् सुगमता से किया।

मेल्पत्तूर नारायण भट्टतिरी एवं पूंतानम नाम्पूतिरी का नाम भी यहाँ उल्लेख्य है।दोनों के 1560 के आसपास है ऐसा माना जाता है। मेल्पत्तूर तो संस्कृत के आचार्य

थे मगर पूंतानम को सिर्फ मलयालम का ही ज्ञान था .꞉श्रीमद भागवत꞉ को आधार बनाकर ꞉ नारयानीयम ꞉ की रचना की।वाट रोग से पीड़ित आप केरल राज्य के विख्यात श्री कृष्ण मंदिर गुरुवायूर आकर प्रतिदिन दस श्लोकों की रचना करके 100दिनों से इसकी रचना की थी।इसमें भक्तिभाव को प्रधानता है।सम्पूर्ण भागवत को आपने 1036 श्लोकों में बांटा है। कर्मयोगियों को भी भक्ति के ज़रिये ही परमात्मा का मिलन संभव है आप इस रचना में दे रहे है।

पूंतानम जी द्वारा विरचित ज्ञानप्पाना आत्म ज्ञान को प्रमुखता दिया है इसमें जिसका वर्णन किया गया है वह ठीक से हमारे दिलों को झुवेंगे क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इन्हीं दशाओं से ही आगे बढ़ रहे है।सत्व ए राज एवं तमो गुणों से निर्मित इस दुनिया में कर्मों को भी तीन श्रेणियों में बांटा सकते है. सभी को अपना कर्म करने का जगह है यह भूमी।कोन्सा काम करना है इसका निर्णय खुद हमें ही करना होगा .जिनको भारत भूमी में जन्म लेने का सुनहला मौक़ा मिला है उन्हें नाम संकीर्तन में लीं होकर ही परम पद तक पहुँच पायेंगे।ज्ञानप्पाना के अलावा आपने सन्तान गोपाल पाना तथा श्रीकृष्ण कर्नामृतम की रचना की है। सरल शब्दों के ज़रिये पून्तानम जी गहन आद्ध्यात्मिक बात रहे है एदेखिये

ᵇ लोक में सब को बाँधनेवाली बात
कर्म हैएइसे जान लें हम सभी
विश्व ए जिसको समझ हम देखते
एक ही महा ज्योती स्वरूप में
जिस में कुछ भी जाकर लगता नहीं
जो किसी से जा लगा रहता नहीं
एक एक पर सोचनेवाले को
एक ही से समझती बात बनी
नासमझ जो होते उनकेलिए
जो ज़रा भी समझ आती नहीं "

अगला संत है श्री चट्टमपी स्वामिकल।आपके पूर्वाश्रम के नाम कुञ्ञन थे। अच्छी तरह पढनेवाले बालक को ज्ुर्वर रामन पिल्ला आशान जी ने क्लास के लीडर या चत्ताम्पी बनाया।बाद में आप वही नाम से विख्यात हुए। सनातन धर्म धर्म के बारे आपको

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

जानकारी थे।पूरे में हूमते हुए आपने ज्ञान बढाये .प्राचीन मलयालम एअद्वैत चिंता पद्धती एनिजानन्द विलासएक्रिस्तुमत परिच्चेदनम आदी आपकी रचनाएँ है। सभी धर्म मानव को पूर्ण बनाने केलिए है माननेवाले आप किसी धर्म को श्रेष्ठ मानने तैयार नहीं थे।

कर्नाटक के भक्ती साहित्य

कर्नाटक के विख्यात संत कवी है सर्वज्ञा अर्थात सब ज्ञान प्राप्त व्यक्ती .कुछ लोग मानते है कि आपका असली नाम पुश्पदत्त था।लेकिन इसके बारे में मतभेद भी है।समाज में व्याप्त अर्थहीन रीती रिवाजों के प्रती उनहोंने आवाज़ उठायी .सर्वज्ञा समाज के लोगों की भलाई के लिए कबीर दास के सामान घुमते रहे।जैसे कबीरदास ने दोहों के ज़रिये अपने विचार लोगों तक पहूँचाये वैसे सर्वज्ञा ने अपने त्रिपदों से .देखिये

चित्ताविल्लादे गुडिया सुत्तिदारे फलाव एनु

यत्तु गानावाणु होटटू टा नित्यादाली

सुट्टी बंदंते सर्वज्ञा।

अर्थात भक्ति के बिना समर्पण के बिना मंदिर के चारों ओर चक्कर करना और बैल का मिल के चारों और चक्कर करना एक जैसा है।

कबीर दास के सामान आप भी एक गुरु की आवश्यकता पर बल दिया हैए आप कहते थे जाति और धर्म मात्र शब्द हैं और कहा कि केवल एक गुरु को ही मानव के समस्याओं के समाधान के बारे में जानकारी है .भक्ती और ज्ञान के माध्यम से परम पद तक पहूंचना आसान काम है।मगर मूर्ती पूजा जैसे आचार मानव और परम पिता के बीच के दूरी बढ़ाएंगे।इसलिए आपने लोगों से नर्गुण ब्रह्म की उपासना करने की सलाह दी. हिन्दी भक्ती साहित्य में जो स्थान कबीरदास जी को है वही स्थान कन्नड़ भक्ती साहित्य में सर्वज्ञा को है .

गुरु बस्वन्ना एक आचार्य और समाज परिष्कर्ता थे .आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह सन्देश फैलाया कि परमात्मा के पास लिंग एजातीएधनी -निर्धन जैसे कोई भेद भाव नहीं है।वहां सबको जाने का अधिकार है आपने समाज में समता लाने की कोशिश में लगे रहे थे।इसलिए लोग आपको भक्ती भंडारी कहकर पुकारते थे .धार्मिक क्षेत्र में किये हुए कामों को मानते हुए लोग आपको क्रांती साधू भी कहते थे।उपनिषद् और वेदान्त से मिले ज्ञान वचन साहित्य में देख सकेंगे . महात्मा गांधी पर आपका प्रभाव देख पाएंगे .1924 के कोंग्रेस के बल्गाम अधिवेशन में आपने बताया .मुझे बसवेश्वर को पूर्णतः समझने का मौक़ा नहीं

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

मिला है अस्पृश्यता उन्मूलन और काम की गरिमा के बारे में जो बात उनहोंने कहा है वह आज भी प्रासंगिक है। अगर वह हमारे समय के दौरान जीवित होता तो मैं कहना चाहोंगा की वह एक पूजनीय संत ही है

कनकदास का जन्म हावेरी जिला के कागिनेरे में हुआ था .उनका बचपन का नाम थिम्मापा नायका था .मध्वाचार्य के शिष्य व्यासतीर्था के शिष्य थे आप . हरिदास भक्ति शाखा के प्रमुख वक्ता कनकदास जी को दार्शनिकए कवी एसंगीत निर्देशक आदी रूपों में माने जा रहे है।कर्नाटिक संगीत के क्षेत्र में आप के नाम विख्यात है।अपने रचनाओं के ज़रिये आप यह सन्देश फैलाना चाहा कि दुनिया में सब बराबर है।कोई भी किसी से श्रेष्ट नहीं है।बदलते दुनिया के साथ बदलना ही सही है।यह सन्देश भी आप अपने दखियानूसी समाज को सिखाया नलचरितम ए हरिभक्ति साराएनरसिम्हा स्तव एरामधन्य चरितएमोहन तरंगिनी आदि आपकी प्रमुख रचनाये है।आपने सांसारिक उपमाओं के ज़रिये भक्ती को सांगत बनाया . उनके लेखन की विशेषता यह है कि कवि खुद के साथ पाठक को दिखाता है।आपने कहा है

ष मैं स्वर्ग में तब जा पावूंगा जब मेरे आत्म (मेरे स्वार्थ) चला जावूंगा "

रामधन्य चरित में सामाज में से उच्च -नीच भाव का उच्चाटन करने की कोशिश दर्शनीय है। जन भाषा में आपने द्वैत वाद के सिद्धांतों को लोगों तक पहुँचाया .देशातान और साधुओं की संगती से मिले ज्ञान से आप समाज में परिवर्तन लाने केलिए प्रयुक्त किया .

अगला आचार्य है श्री पुरंदरदास . पुरंदरदास कर्नाटिक संगीत के प्रमुख संगीतकार थे। पुरन्दर वित्तला नाम से ढेर सारे कीर्तन कन्नड़ और संस्कृत भाषों में आपने रची थी।कर्नाटक संगीत सिखाने का व्यवस्थित रूप आपने ही बनाया और माया मालव गौला राग का आविष्कार भी किया .कर्नाटक संगीत के पितामह के रूप में आप जाने जाते है .हिन्दुस्तानी संगीतज्ञ तानसेन के गुरु हरिदास आप के शागिर्द थे .

वीरशैवा भक्ती सम्प्रदाय के प्रमुख कवयित्री थी अक्का म्हाद्वी। कर्नाटक के भक्ती साहित्य में आपको प्रमुख स्थान मिली है .कर्नाटक भक्ती साहित्य में रहस्यावादी कवी क रूप में भी आप जाने जाते है . मीरा बाई और आंडाल के समान अक्का महादेवी भी भगवान् को अपने पाती के रूप में स्वीकारा .मीरा और और आंडाल भगवान् विष्णु को अपने पती के रूप में स्वीकार था तो अक्का चेन्ना मल्लिकार्जुना (शिव) को। अक्का महादेवी भारत के पुरुष प्रधान समाज में जल्द से जल्द नारीवादियों में था. वह एक रहस्यवादी द्रष्टा कवि और समाज सुधारक थे. कन्नड़ भाषा में लिखित अपने वचनों में देशातान और साधुओं की संगती से मिले ज्ञान को आपने समेट ली है. जिस समाज में नारी को पढाई करने में

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

कई मुश्किलों को सामना करना पड रहे थे उसी समाज में आप जैसे महतियाँ भी थीएजिनको सुनने पढ़े लिखे लोग एकत्रित होते थे . देखिये उनकी कुच्छ पंक्तियाँ

भ मैं एक सुंदर से प्यार करती हूँ

उसे न तो मृत्यु है न क्षय

कोई जगह नहीं है या पक्ष

कोई अंत नहीं है और न ही दाग.

मैं प्यार करता हूँ उसे माँ हे. सुनो.

उसे कोई बंधन नहीं और न ही डर

कोई कबीले भूमि नहीं कोई स्थल भी नहीं

प्रभुए जो अन्यथा अल्लामाए अल्लामा प्रभु या प्रभुदेवरु के रूप में जाना जाता हैए शायद 12 वीं सदी के बहुत शुरुआत में पैदा हुआ था. आपका जन्म शिवमोग्गा जिले में हुए थे।आपके काव्यात्मक शैली रहस्यवादी और गुप्त माने जाते है। लिङ्गयता सम्प्रदय के त्रि मॉर्तियोन मे एक थे अल्लामा .बसवन्ना और अक्का महदेवी के बाद आप के ही नाम आते है .उनके द्वारा निर्मित साहित्य शाखा वचन साहित्य कहा जता है. देखिये कुछ पंक्तियाँ –

ष हे! गुफाओं की भगवान!

यदि पहाड़ को ठंडा लगता हैए

उसे किस्के सहारे सम्हालेङ्गे

यदि भक्त संसार में हैए

वे उसके साथ क्या तुलना करेंगेछ

तेलुगु भक्ति साहित्य

श्री निम्बार्काचार्य के जन्म आंध्रा प्रदेश के वैदूर्या शहर में हुए थे .द्वैताद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक के रूप में आप विख्यात हुये।कर्नाटक राज्य में जन्म लिए मध्वाचार्य के नाम भी यहाँ उल्लेखनीय है। आन्ध्र प्रादेश के एक प्रमुख वैष्णव आचार्य थे किताम्बी श्रीनिवास आचार्य।अहोबिला नामक जगह के रहनेवाले थे आप।यहाँ विष्णु भगवान् के नरसिम्ह अवतार के 9 रूप की प्रतिष्टा हई है

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

कुमारागिरी वेमा रेड्डी तेलुगु साहित्य के विख्यात कवी थे। आप वेम्ना नाम से भी जाने जाते हैए योगा एनैतिकता एव परमात्मा के बारे में आपने अपना विचार प्रस्तुत किये है।पूरे दक्षिण भारत में घुमते हुए आपने जनसामान्य की भाषा में अपना विचार प्रस्तुत किया . देखिये तेलुगु पंक्तियों के अनुवाद

ष्लोहा टूट जाने पर कई बार जुडा पायेंगे

मगर दिल टूटने पर जुड़ नहीं पायेंगे "

ष एक बूँद पानी सीपी के अन्दर मोती बन जाती है

पानी में गिरनेवाली कीचड पानी की हिस्सा हो जाती है

ईश्वर को ढूंढनेवाले खुद ईश्वर बन जाते है "

तेलुगु साहित्य के अगला संत कवी है बोम्मेरा पोतेना .आपका जन्म वारंगल जिला के बोम्मेरा नामक गाँव में हुआ था .आप ने भागवत पुराणं संस्कृत से तेलुगु में किया था एजो पोतना भागवतम या आन्ध्र भागवतम नाम से जाने जाते है .पहले आप शिवजी के भक्त थे बाद में राम भक्त बन गए .आपने वीरभद्र विजयं .भोगिनी दण्डकम आदी आपकी प्रमुख रचनाएं है .

तेलुगु भाषा को अपना अस्तित्व प्रदान करनेवाले आचार्य थे राजमुंद्री में जन्म लिए नान्या भट्टारक .तेलुगु भाषा के पहला व्याकरण ग्रन्थ " आंध्रा शब्दा चिंतामणी " की रचना आपनी की थी .तेलुगु के आदि कवी के रूप में आप जाने जाते है . महाभारत के एक तिहाई भाग आपने आंध्र भारतं नाम से रचा है।जो महाभारत के अनुवाद जैसा नहीं किसी मूल कृती जैसा ही है। 300 सालों के बाद तिक्कन्ना और एरन्ना इस रचना को पूर्ण बनाया . नन्नाया तेलुगु भाषा के डिक्टेटर के रूप में भी जाने जाते है. ये तेलुगु भक्ति साहित्य के कवित्रय कहा जाता है . नन्नाया ने संस्कृत निष्ठ तेलगु भाषा का प्रयोग किया था .

कवित्रय के दुसरे कवी थे तिक्कन्ना।आप अद्वैतवाद के वक्ता थे .आपने अपने रचाओ के माद्ध्यम से तेलुगु साहित्य को संपुष्ट बनाया .महाभारत की आदि पर्व और वन पर्व का अनुवाद नान्नाया ने किया था और तिक्कान्ना ने उसके बाद पर्व के भाग का अनुवाद किया और बाद में एरान्ना ने पूरा कर दिया . गुंटूर में जन्म लिए आपने वैष्णव और शैव धर्मावालाम्बीयो के बीच की दूरी कम करने में रत रहे . हरिहराद्वैत वाद नाम से आपने उन दोनों के बीच एकता स्थापित करने का प्रया किया .आपने शुद्ध तेलुगु भाषा का प्रयोग किया था .

एरान्ना का जन्म गुद्लूरू में हुआ था .आप एर्राप्पगादा नाम से भी जाने जाते है .महाभारत को करने के बाद आपने रामायणम और हरिवंशम का भी अनुवाद तेलुगु में किये .नरासिम्हापुराणं आपकी प्रमुख रचना है . प्रबंधात्मकता के कारण तेलुगु साहित्य के मील के पत्थर के रूप में यह रचना जाना जाता है।इसी के आहार पर आपको प्रबन्ध परमेश्वर की उपाधी मिले थे .चम्पू शैली (गध्य और पद्य मिश्रित) में भी आपने रचनाएं की थी . कवित्रय के कवियों के बीच के पुल के रूप में भी कुछ लोग आपको मान रहे है

दक्षिण भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलनों की एक खास भूमिका थे मध्यकाल के सभी संतों और भक्त कवियों ने इंसान को त्याग व मनुष्यता पर टिके रहने का संदेश दिया था। आज इन्हीं सच्चे संतों की आवश्यकता फिर से जान पड़ती है ताकि इस अमानवीयता से जलते संसार कोए भभकते अंगारों से बचाया जा सके।

सहायक ग्रन्थ

१.भारतीय साधूएसंत और सन्यासी दृरवि कपूर एवाणी प्रकाशन एनयी दिल्ली २०१५

२.महाकवि पूंथान्म एराजेश पी के भाषण ए२०१६

३.मध्य कालीन भारत सामन्य अद्ध्ययन एराजेश जोशुएआक्मे प्राइवेट ली.२०१७

४.तमिल शैव भक्ति साहित्य एरवीन्द्र कुमार सेठ एसाहित्य शोध संस्थान २०१३

५.भक्ति सिद्धांतएआशा गुप्ताएलोकभारती इलाहबाद २००७

७.सप्त सिन्धु वॉल्यूम १७

८.अलवार भक्तों का तमिल प्रबन्धम और हिंदी कृष्ण काव्य एमालिक मुहम्मद एविनोद पुस्तक मंदी १९६४

९.तेलुगु भक्ति साहित्य सन्दर्भ और समीक्षा दृ डॉ एस.टी नरसिम्हाचारीवाणी प्रकाशन नयी दिल्ली ए२००४

१०.भक्ति तत्व और तेलूग का भक्ति काव्य एसीका रामलू एदक्षिण सालिया साहित्य समिति १९७७

११.भक्ति आन्दोलन और साहित्य एप्रगति प्रकाशन ए१९७८

१२.हिदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अद्ध्ययन राम झबीला त्रिपाठी एवाणी प्रकाशन २०१७

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

१३. भक्तिकाव्य और मानव-मूल्य :डॉ.वीरेंद्र मोहनएप्रकाशन संस्थानए दरियागंज नई दिल्लीए संस्करण 1986

क्तण्त्ंदरपजी ड

भ्मंक व िजीम क्मचंतजउमदज

क्मचंतजउमदज व िभ्पदकप

डण्म्ै ोउंइप ब्वससमहमएच्ण्टमउइंससनत च्ण्व्

ज्ञवकनदहंससनत जीतपेनत क्ज 680671

०९३८७४४१३००

तंदरपजी/उमेंउंइपबवससमहमण्मकनण्पद